Subject :- Sociology Date :- 25/05/2020
Class :- D-II (H) Paper :- 3rd (1)
Topic :- भारतीय समाज की विशेषता
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher Marwari College, Darbhanga

भारतीय समाज की विशेषता

Online Study Material No :- (88)

भारतीय समाज की विशेषताओं को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है :- पहली विशेषताएँ वे हैं जिनका सम्बन्ध इस समाज को संगठित रखने वाली विभिन्न व्यवस्थाओं से है जबकि दूसरे वर्ग में वे विशेषताएँ आती हैं जिसका उद्देश्य व्यक्ति के सामाजिक सम्बन्धों को अधिक व्यवस्थित बनाना है। इस दृष्टिकोण से भारतीय समाज की सभी मुख्य विशेषताओं को निम्नांकित रूप से समझा जा सकता है :-

1. **वर्ण-स्तरीकरण** → किसी भी समाज में सभी व्यक्तियों की स्थिति समान नहीं हो सकती। कुछ समाज में आर्थिक आधार पर उनके बीच विभेद होते हैं जबकि अनेक समाजों में रंग अथवा प्रजातिय भिन्नता के आधार पर समाज अनेक उच्च और निम्न भागों में विभाजित हो जाता है। भारत में यह विभाजन चार वर्गों के रूप में किया गया है। यह माना गया है कि समाज में सभी व्यक्तियों के गुण तथा स्वभाव एक दूसरे से भिन्न होते हैं। इस दृष्टिकोण से यह सम्पूर्ण समाज को **ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र** जैसे चार वर्गों में विभाजित कर दिया गया। इन सभी के कार्यों का भी निर्धारण किया गया। जैसे- ब्राह्मणों को अध्ययन एवं धार्मिक जीवन से सम्बन्धित कार्य, क्षत्रियों को प्रशासन का कार्य, वैश्यों को व्यापार एवं पशुपालन का कार्य तथा शूद्रों को सामान्य सेवा का कार्य सौंपा गया। इस प्रकार वर्ण-स्तरीकरण के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यवसाय में विशेष कुशलता प्राप्त करने तथा अपनी स्वभावगत विशेषताओं में सुधार करने का प्रोत्साहन दिया गया।
2. **आश्रम व्यवस्था** → भारतीय समाज में व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को 25-25 वर्ष के आधार पर आश्रम व्यवस्था का निर्माण किया गया है। इन आश्रमों में क्रमशः **ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रम सम्मिलित** है। इस आश्रम का मुख्य उद्देश्य जीवन के पहले 25 वर्ष तक व्यक्ति ब्रह्मचर्य आश्रम में रहकर अपना शारीरिक तथा मानसिक विकास करेगा। इसके पश्चात आगामी 25 वर्ष तक गृहस्थ आश्रम में रहकर पारिवारिक दायित्वों को पूरा करेगा। वानप्रस्थ आश्रम की आयु 50 वर्ष से लेकर 75 वर्ष तक रखी गयी है जिसमें व्यक्ति अपने पारिवारिक अधिकार पुत्रों को

Ajanta PRODUCTS Oxford

Scanned with CamScanner

सौंपकर अपना आध्यात्मिक विकास आरंभ करता है। संन्यास आश्रम वह है जिसका आरंभ 75 से लेकर मृत्यु पर्यन्त व्यक्ति सांसारिक बन्धनों से पूरी तरह अलग होकर मोक्ष की तैयारी करता है। इस प्रकार आश्रम व्यवस्था एक ऐसी व्यवस्था है जो वैयक्तिक विकास द्वारा सामाजिक विकास को बढ़ाने का प्रयत्न करती है।

3. संयुक्त परिवार व्यवस्था → भारतीय समाज की केन्द्रीय इकाई संयुक्त परिवार है। यहाँ संयुक्त परिवार के रूप में एक ऐसी पारिवारिक व्यवस्था को महत्व दिया गया जिसमें 3-4 पीढ़ियों के व्यक्ति साथ-साथ रहते हों, एक ही स्टोव से बना भोजन करते हों, समान सम्पत्ति तथा सामान्य पूजा में भाग लेते हों तथा परिवार के सभी दायित्वों को पूरा करने में एक-दूसरे को सहयोग देते हों। भारतीय संस्कृति में जिन संस्कारों, अनुष्ठानों तथा यज्ञों को जीवन के लिए आवश्यक माना गया, उनकी पूर्ति के लिए भी परिवार को संयुक्त रूप दिया गया।

4. जाति व्यवस्था → जिन व्यक्तियों ने भी विवाह, खान-पान तथा सामाजिक सम्पर्क के नियमों का उल्लंघन किया, उन व्यक्तियों के वंश को एक नयी जाति के रूप में देखा जाने लगा। इसके फलस्वरूप धीरे-धीरे जातियों की संख्या में निरंतर वृद्धि होती गयी। व्यक्ति एक बार जिस जाति के सदस्य के रूप में प्रतिष्ठित हो गया, उसे अपनी जाति की सदस्यता में परिवर्तन करने की कभी अनुमति नहीं दी गयी। इस प्रकार भारतीय समाज चार वर्णों में विभाजित नहीं रहा बल्कि प्रत्येक वर्ण से सम्बन्धित हजारों जातियों में विभाजित हो गया।

5. विवाह का धार्मिक स्वरूप → भारतीय समाज में यह व्यवस्था की गयी कि विवाह का उद्देश्य यौनिक संतुष्टि करना नहीं बल्कि इसके द्वारा गृहस्थ आश्रम के दायित्वों को पूरा करना है। यह स्पष्ट किया गया कि पति-पत्नी का सम्बन्ध एक स्थायी तथा जन्म-जन्मान्तर का सम्बन्ध है तथा विवाह के द्वारा संतान को जन्म इसलिए दिया जाता है जिससे धार्मिक क्रियाओं को पूरा किया जा सके। इसी आधार पर विवाह-विच्छेद को अधार्मिक कृत्य माना गया। यह विशेषता भारतीय समाज की एक ऐसी विशेषता है जो संसार के किसी भी दूसरे समाज में देखने को नहीं मिलती।

6. प्राचीनता तथा स्थायित्व → आज से लगभग 5000 वर्ष पहले जब संसार का एक बड़ा हिस्सा बर्बर और असभ्य जीवन व्यतीत कर रहा था, तब यहाँ का वैदिककालीन समाज ज्ञान और समृद्धि के शिखर पर था। उस समय मिस्र, बेबीलोनिया, यूनान और रोम के समाज भी विकसित अवस्था में थे लेकिन इनकी सामाजिक

Scanned with CamScanner

व्यवस्था का जहाँ धीरे - धीरे पतन हो गया, वहीं भारतीय समाज अपनी व्यवस्थाओं को आज तक स्थायी बनाए हुये हैं। इस बीच हमारे समाज पर शक, हूण, मंगोल तथा अनेक दूसरी बाहरी शक्तियों द्वारा अनेक आक्रमण किये गये लेकिन भारतीय समाज की संरचना नष्ट नहीं हो सकी। जिस प्रकार हजारों वर्ष पहले भारतीय समाज का जीवन वर्ण-व्यवस्था, संयुक्त परिवार, गाँव पंचायतों तथा कर्म सम्बन्धी विश्वासों से प्रभावित था, उसी प्रकार आज भी यह विशेषताएँ हमारी सामाजिक व्यवस्था का प्रमुख आधार है।

S.N. Choudhary
Marwari College
L.N.M.U

Scanned with CamScanner